सेमेस्टर II
हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

लेखन कौशल का महत्व—भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार किसी भाषा का सुनना, बोलना और पढ़ना महत्व रखता है, उसी प्रकार लिखने का भी अपना एक महत्व है। अतः इसकी उपेक्षा हम नहीं कर सकते।

(1) किसी भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ने के साथ-साथ उस भाषा को लिखा भी जाय।

(2) आधुनिक सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने के लिए लिखना जानना अति आवश्यक है। बिना लिखना जाने हम न तो किसी को पत्र लिख सकते हैं और न ही किसी के पत्रों का प्रत्युत्तर दे सकते हैं। दूसरे शब्दों में समाज के विभिन्न सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

(3) बौद्धिक विकास के लिए भी लिखना सीखना आवश्यक है। हमारा बौद्धिक विकास ठीक प्रकार से तभी हो सकता है जब हम अपने विचारों को लेखन शक्ति द्वारा ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर लेते हैं। अभिव्यक्ति के लिए ही समाचार-पत्रों तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विद्वान लोग लेख लिखते हैं।

(4) विचार करने तथा मनन करने के लिए लेखन का ज्ञान विशेष सहायक होता है किसी विचार को लिखकर उस पर मनन सरलता से किया जा सकता है।

(5) अपने देश की सभ्यता तथा संस्कृति का ज्ञान हमें लेखन कला के माध्यम से ही हुआ है। यदि लेखन कला न होती तो धार्मिक तथा राजनीतिक ग्रन्थ हमारे सामने नहीं आ पाते और हम प्राचीन संस्कृति के ज्ञान से वंचित रह जाते।

(6) भाषा में एकरूपता तथा स्थायित्व लेखन के माध्यम से ही आ पाता है।

(7) संसार के विभिन्न देशों से परस्पर सम्बन्ध लिखित भाषा के माध्यम से ही होता है।

(8) लेखन कला बालकों की अँगुलियों तथा माँसपेशियों को सुदृढ़ बनाती है। इसमें मस्तिष्क तथा हाथ दोनों का व्यायाम साथ-साथ चलता है।

Scanned with CamScanner